पाठ 9

केवट का प्रेम

चौपाई–बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए।।
माँगी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।।
चरण कमल रज कहुँ सब कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई।।
छुअत सिला भई नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।।
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई।।
एहिं प्रतिपालउँ सब परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू।।
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू।।

छन्द– पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं।।
बरु तीर मारहुँ लखन पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं।।

सोरठा–सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे
विहसे करुनाएन, चितइ जानकी लखन तन।।

चौपाई–कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोई करु जेंहि तव नाव न जाई।।
बेगि आनु जल पाय पखारू। होत विलम्बु उतारहि पारू।।
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।।
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किय तिहुं पगहु ते थोरा।।
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेई आवा।।
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा।।
बरसि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुण्यपुंज कोई नाहीं।।

दोहा– पद पखारि जलु पान करि, आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि, मुदित गयउ लेइ पार।।

–तुलसीदास (श्रीरामचरितमानस से)

शब्दार्थ

बरबस	–	मुश्किल में, लाचार	सुरसरि	–	गंगा
मरमु	–	मर्म, रहस्य	मूरि	–	जड़ी–बूटी
पाहन	–	पत्थर	तरनिउ	–	नाव भी
घरिनी	–	घरवाली, पत्नी	कबारू	–	काम–धंधा
पदुम	–	कमल	चितइ	–	देखकर
भवसिंधु	–	संसार रूपी सागर	रजायसु	–	राजा की आज्ञा
थोरा	–	कम	सरोज	–	कमल
अनुरागा	–	प्रेम	सुर	–	देवता
सुमन	–	फूल	बैन	–	वचन
पितर	–	पूर्वज	मुदित	–	प्रसन्न

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. श्रीराम के पैरों की धूल का क्या प्रभाव था?
2. केवट श्रीराम को बिना पैर धोए नाव पर क्यों नहीं बैठाना चाहता था?

लिखें

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. प्रस्तुत पाठ तुलसीदास के किस ग्रंथ से लिया गया है ?
2. यह पाठ कौनसी भाषा में लिखा गया है?
3. अहल्या किस ऋषि की पत्नी थी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. केवट श्रीराम के चरण कमलों की रज का कौनसा रहस्य जानता था ?
2. श्रीराम के पैर धोकर केवट प्रसन्न क्यों हो गया था ?
3. केवट लक्ष्मण जी के क्रोध से भी क्यों नहीं डरता था ?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. इस पाठ में केवट का श्रीराम के प्रति अगाध प्रेम प्रकट हुआ है, कैसे? लिखिए।
2. 'केवट का प्रेम' पाठ श्रीराम की उदारता का सुंदर उदाहरण है, कैसे? अपने विचार तर्क सहित लिखिए।

भाषा की बात

1. जब एक शब्द के कई समानार्थी शब्द आते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। जैसे– इस पाठ में पत्थर के अर्थ में 'सिला' व 'पाहन' शब्द प्रयुक्त हुए हैं। कमल शब्द के अर्थ में 'पदम' व 'सरोज'।

निम्नांकित शब्दों के सही पर्यायवाची समूह चुनकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

गंगा – सागर, जलनिधि, रत्नाकर

पैर – पुष्प, कुसुम, प्रसून, सुमन

समुद्र – देवनदी, भागीरथी, जाह्नवी

संसार – पद, चरण, पाँव, पग

फूल – जग, जगत, लोक

आप अन्य शब्दों का चयनकर उनके पर्यायवाची लिखिए।

2. ध्यान से पढ़िए–

तुलसी–सा कवि, मीराँ–सी भक्तिन

यहाँ समानता बताने के लिए दो शब्दों 'सा' और 'सी' का प्रयोग किया गया है। आप भी ऐसे ही समानता बताने वाले शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए–

(1) राम–सा

(2) सीता–सी

(3) आकाश–सा

3. कोष्ठकों में लिखे वर्णों से नए शब्द बनाइए। आप वर्णों, मात्राओं की आवृत्ति कर सकते हैं।

स	ह	ा
य	त	ी

जैसे – ताता, तात, सीता.....

पाठ से आगे

1. यदि आप केवट के स्थान पर होते तो श्रीराम से क्या निवेदन करते?
2. प्रस्तुत पाठ अवधी भाषा में लिखा गया है। अवधी भाषा के संबंध में शिक्षक/शिक्षिका से जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. केवट की तरह राम के अन्य भक्तों के भी नाम जानिए।

यह भी करें

1. अहल्या उद्धार व वामन अवतार की अंतर्कथाएँ अपने गुरुजी से पूछिए।

यह भी जानें

श्रीरामचरितमानस महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य है जिसमें श्रीराम की लीलाओं को मनुष्य के रूप में वर्णित किया है। श्रीरामचरितमानस में सात सोपान (काण्ड) हैं, जिनमें श्रीराम की लीलाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति की सुंदर व आदर्श छवि प्रस्तुत हुई है।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

कागा किसका धन हरै, कोयल किसकूं देय। मीठी वाणी बोल के, जग अपनो कर लेय।।